

अध्याय 11

सूरदास के पद

1 अंक वाले प्रश्न

प्रश्न 1: सूरदास के वांग्मयिक कार्य का क्या नाम है?

उत्तर: सूरदास के वांग्मयिक कार्य का नाम "सूर सागर" है।

प्रश्न 2: सूरदास के रचनाएं किस भाषा में लिखी गई थीं?

उत्तर: सूरदास की रचनाएं ब्रजभाषा में लिखी गई थीं।

प्रश्न 3: सूरदास की किस विशेषता को जाना जाता है?

उत्तर: सूरदास को भक्ति संगीत और भजनों के लिए जाना जाता है।

प्रश्न 4: सूरदास के पदों में किस विषय पर चर्चा होती है?

उत्तर: सूरदास के पदों में प्रेम, भक्ति, और भगवान की भक्ति पर चर्चा होती है।

प्रश्न 5: सूरदास के काव्य की मुख्य विशेषता क्या थी?

उत्तर: सूरदास के काव्य की मुख्य विशेषता उसकी सादगी, भक्ति और गायनीयता थी।

प्रश्न 6: सूरदास के पद किस काल में लिखे गए थे?

उत्तर: सूरदास के पद भक्ति काल में लिखे गए थे।

2 अंक वाले प्रश्न

1. बालक श्रीकृष्ण किस लोभ के कारण दूध पीने के लिए तैयार हुए?

उत्तर: माता यशोदा ने श्रीकृष्ण को बताया की दूध पीने से उनकी चोटी बलराम भैया की तरह हो जाएगी। श्रीकृष्ण अपनी चोटी बलराम जी की चोटी की तरह मोटी और बड़ी करना चाहते थे इस लोभ के कारण वे दूध पीने के लिए तैयार हुए।

2. श्रीकृष्ण अपनी चोटी के विषय में क्या-क्या सोच रहे थे?

उत्तर: श्रीकृष्ण अपनी चोटी के विषय में सोच रहे थे कि उनकी चोटी भी बलराम भैया की तरह लम्बी, मोटी हो जाएगी फिर वह नागिन जैसे लहराएगी।

3. दूध की तुलना में श्रीकृष्ण कौन-से खाद्य पदार्थ को अधिक पसंद करते हैं?

उत्तर: दूध की तुलना में श्रीकृष्ण को माखन-रोटी अधिक पसंद करते हैं।

4. 'तैं ही पूत अनोखी जायौ' – पंक्तियों में ग्वालन के मन के कौन-से भाव मुखरित हो रहे हैं?

उत्तर: 'तैं ही पूत अनोखी जायौ' – पंक्तियों में ग्वालन के मन में यशोदा के लिए कृष्ण जैसा पुत्र पाने पर ईर्ष्या की भावना व कृष्ण के उनका माखन चुराने पर क्रोध के भाव मुखरित हो रहे हैं। इसलिए वह यशोदा माता को उलाहना दे रही हैं।

5. मक्खन चुराते और खाते समय श्रीकृष्ण थोड़ा-सा मक्खन बिखरा क्यों देते हैं?

उत्तर: श्रीकृष्ण को माखन ऊँचे टंगे छींकों से चुराने में दिक्कत होती थी इसलिए माखन गिर जाता था तथा चुराते समय वे आधा माखन खुद खाते हैं व आधा अपने सखाओं को खिलाते हैं। जिसके कारण माखन जगह-जगह ज़मीन पर गिर जाता है।

6. सूरदास के पदों का मुख्य उद्देश्य क्या था?

उत्तर: सूरदास के पदों का मुख्य उद्देश्य भगवान की भक्ति और प्रेम को व्यक्त करना था।

4 अंक वाले प्रश्न

1. दोनों पदों में से आपको कौन-सा पद अधिक अच्छा लगा और क्यों?

उत्तर: दोनों पदों में प्रथम पद सबसे अच्छा लगता है। क्योंकि यहाँ बाल स्वभाववश प्रायः श्रीकृष्ण दूध पीने में आनाकानी किया करते थे। तब एक दिन माता यशोदा ने प्रलोभन दिया कि कान्हा ! तू नित्य कच्चा दूध पिया कर, इससे तेरी चोटी दाऊ (बलराम) जैसी मोटी व लंबी हो जाएगी। मैया के कहने पर कान्हा दूध पीने लगे। अधिक समय बीतने पर श्रीकृष्ण अपने बालपन के कारण माता से अनुनय-विनय करते हैं कि तुम्हारे कहने पर मैंने दूध पिया पर फिर भी मेरी चोटी नहीं बढ़ रही। उनकी माता से उनकी नाराज़गी व्यक्त करना, दूध न पीने का हट करना, बलराम मैया की तरह चोटी पाने का हट करना हृदय को बड़ा ही आनंद देता है।

2. दूसरे पद को पढ़कर बताइए कि आपके अनुसार उस समय श्रीकृष्ण की उम्र क्या रही होगी?

उत्तर: दूसरे पद को पढ़कर लगता है कि उस समय श्रीकृष्ण की उम्र चार से सात साल रही होगी तभी उनके छोटे-छोटे हाथों से सावधानी बरतने पर भी माखन बिखर जाता था।

3. श्रीकृष्ण गोपियों का माखन चुरा-चुराकर खाते थे इसलिए उन्हें माखन चुरानेवाला भी कहा गया है। इसके लिए एक शब्द दीजिए।

उत्तर: माखन चुरानेवाला – माखनचोर

4. श्रीकृष्ण के लिए पाँच पर्यायवाची शब्द लिखिए।

उत्तर: श्रीकृष्ण के पर्यायवाची शब्द – गोविन्द, रणछोड़, वासुदेव, मुरलीधर, नन्दलाल।

5. सूरदास के पदों में कौन-कौन से भाव व्यक्त किए गए हैं?

उत्तर: सूरदास के पदों में प्रेम, श्रद्धा, भक्ति और भाग्य जैसे विभिन्न भाव व्यक्त किए गए हैं।

6. सूरदास के पदों का संगीत किस प्रकार का था?

उत्तर: सूरदास के पदों का संगीत देशी और लोकप्रिय रागों पर आधारित था।

7.सूरदास के काव्य में किस भगवान की भक्ति की गई है?

उत्तर: सूरदास के काव्य में मुख्य रूप से भगवान श्रीकृष्ण की भक्ति की गई है।

8.कुछ शब्द परस्पर मिलते-जुलते अर्थवाले होते हैं, उन्हें पर्यायवाची कहते हैं। और कुछ विपरीत अर्थवाले भी। समानार्थी शब्द पर्यायवाची कहे जाते हैं और विपरीतार्थक शब्द विलोम, जैसे –

पर्यायवाची	चंद्रमा-शशि, इंदु, राका मधुकर- भ्रमर, भौरा, मधुप सूर्य- रवि, भानु, दिनकर
विपरीतार्थक	दिन-रात श्वेत-श्याम शीत-उष्ण

पाठों से दोनों प्रकार के शब्दों को खोजकर लिखिए।

उत्तर:

पर्यायवाची शब्द	बेनी – चोटी मैया – जननी, माँ, माता दूध – दुग्ध, पय, गोरस काढ़त – गुहत बलराम – दाऊ, हलधर ढोटा – सुत, पुत्र, बेटा
-----------------	--

विपरीतार्थक शब्द	लम्बी – छोटी स्याम – श्वेत संग्रह – विग्रह विज्ञ – अज्ञ रात – दिन प्रकट – ओझल
------------------	--

रिक्त स्थान प्रश्न और उत्तर भरें

प्रश्न 1: सूरदास के पदों का क्या विषय होता है?

उत्तर: भगवान की भक्ति

प्रश्न 2: सूरदास की रचनाएं किस भाषा में लिखी गई थीं?

उत्तर: ब्रजभाषा में

प्रश्न 3: सूरदास का जन्म किस समय हुआ था?

उत्तर: 1478 ईसवी में

प्रश्न 4: सूरदास की रचनाएं किस धर्म के प्रति समर्पित थीं?

उत्तर: भक्ति

प्रश्न 5: सूरदास के पदों में किस भगवान की महिमा होती है?

उत्तर: श्रीकृष्ण की

प्रश्न 6: सूरदास के पदों का क्या प्रमुख उद्देश्य था?

उत्तर: भगवान की प्रेम और भक्ति को व्यक्त करना

प्रश्न 7: सूरदास के पदों की किस भावना को व्यक्ति किया गया है?

उत्तर: भक्ति और श्रद्धा

प्रश्न 8: सूरदास के पदों की मुख्य विशेषता क्या होती है?

उत्तर: सादगी और संगीतमयता

प्रश्न 9: सूरदास के पदों का संगीत किस प्रकार का होता है?

उत्तर: देशी और लोकप्रिय रागों पर आधारित

प्रश्न 10: सूरदास के पदों का क्या प्रमुख विषय होता है?

उत्तर: भक्ति और प्रेम के उत्साहवर्धक विषय

सारांश

सूरदास, एक प्रतिष्ठित कवि-संत, भारतीय भक्ति आंदोलन में एक प्रमुख व्यक्ति थे। उन्होंने भगवान कृष्ण के प्रति अपनी भक्ति और समर्पण का प्रतीकियात्मक साहित्य रचा। 1478 में जन्मे सूरदास की कविताएं मुख्य रूप से भक्ति, प्रेम और विश्वास को व्यक्त करती थीं, जिन्होंने राधा-कृष्ण के दिव्य प्रेम को गाया। उन्होंने ब्रज भाषा में अपनी कविताएं लिखीं, जो हिंदी का एक खास शैली था, और उनके शब्दों में भक्ति, प्रेम और विश्वास की अद्भुत भावना थी। सूरदास के काव्य में सादगी, संगीतीयता, और भक्ति की गहराई से भरी शक्ति थी। उनकी रचनाएं भक्ति, आध्यात्मिक तड़प, और ईश्वर को समर्पित होने की अद्वितीयता को दर्शाती हैं, और प्रेम और विश्वास के मार्ग पर समयगामी विचारों को प्रस्तुत करती हैं। सूरदास के योगदान भक्ति साहित्य में हमेशा से प्रेरणा का स्रोत रहा है और कविता के प्रेमी और भक्तों के दिलों में सर्वदा बसा रहेगा।